International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 114-119

महाभारत के अनुशासन पर्व में उल्लेखित राजनीतिक सिद्धांतों व नैतिक मूल्यों की वर्तमान मानव जीवन में प्रासंगिकता

शिल्पा मीणा*

सार

पंचम वेद महाभारत में वेदव्यास कहते हैं कि मनुष्य सृष्टि निर्माता ब्रह्मा की सर्वोत्तम कृति है उससे बढ़कर कोई नहीं है – "नहि मानुषात्श्रेष्ठतरं हिं किंचित्।" किंतु मनुष्य की यह श्रेष्ठता उसके उत्तम गुणों व सिद्धांतों के कारण है, केवल शरीर धारण करने से वह श्रेष्ठ नहीं बन जाता। इसको महाभारत में कौरव–पांडवों के संदर्भ में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस लेख में महाभारत के अनुशासन पर्व में उल्लिखित राजनीतिक सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन करते हुए वर्तमान समय में उसकी आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा। इस लेख का तीन भागों में विभाजन किया गया है जिसमें प्रथम भाग राजनीतिक सिद्धांतों से संबंधित है और द्वितीय भाग नैतिक मूल्यों से संबंधित है। अंतिम भाग में निष्कर्ष लिखा गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में दो उपपर्व व 168 अध्याय हैं। इसमें भीष्म के साथ युधिष्ठिर का संवाद दिया गया है, भीष्म युधिष्ठिर को नाना प्रकार के तप, धर्म और दान की महिमा बताते हैं। इसमें भीष्म के पास युधिष्ठिर का जाना, भीष्म से वार्तालाप करना, भीष्म का प्राण त्याग और युधिष्ठिर द्वारा अंतिम संस्कार किए जाने का वर्णन है।

शब्दकोशः *अनुशासन पर्व, राजनीतिक सिद्धांत, नैतिक मूल्य, धर्म, दान, कर्म, प्रासंगिकता, मानव जीवन।*

प्रस्तावना

अनुशासन पर्व में राजनीतिक सिद्धांतों पर चिंतन

महाभारत को राजनीतिक चिंतन का आधार स्तंभ व महत्वपूर्ण ग्रंथ में से एक माना जाता है। महाभारत में उत्तर वैदिक काल के बाद भारत की राजनीतिक सामाजिक दशा का वर्णन मिलता है। इसमें राजनीति और धर्म के नियम दिए गए हैं यह आदर्श राज्य की कल्पना, स्थापना व उसको व्यवहार में परिणत करने का प्रयास करती है। आज जब लोकतंत्र में राजनीतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है तो आवश्यकता है हम अपने महत्वपूर्ण धार्मिक राजनीतिक ग्रंथों का पुनरावलोकन करें और वहां से कुछ सिद्धांतों को अंगीकार करें जिससे समुचित राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना हो सके। कहा जाता है" जिस राज्य में कोई राजा नहीं होता, वहां धर्म स्थित नहीं रह सकता।" राजनीतिक धार्मिक व्यवस्था स्थिर न रहने से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को खा जाता है।

महाभारत का शांति पर्व और राजधर्मानुशासन अध्याय राजनीति विचारों की उच्चतम विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति है। भीष्म द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धांतों को वास्तविक स्वरूप में नैतिक मान्यता प्राप्त है। युधिष्ठिर का राज धर्म भीष्म के मूल राजनीतिक विचारों की व्याख्या है जो अन्य जीवित प्राणों के लिए जूठन है। राजधर्म की

* शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

व्याख्या करते हुए भीष्म कहते हैं कि राजा को चारों वर्णों के धर्म की रक्षा करनी चाहिए। धर्म से विचलित व्यक्ति को बाहुबल से निग्रह करें। मानव समाज की कल्याण के लिए चारों वर्ण स्वधर्म पालन करें।

भीष्म राजा की तुलना गर्भवती स्त्री से करते हैं जो अपने रुचि का त्याग कर गर्भस्थ शिशु के पोषण के लिए सब कुछ करती है। भीष्म ने राज्य पुनर्निर्माण की नीति महाभारत के बाद की परिस्थितियों के लिए प्रतिपादित की थी। राष्ट्र निर्माण में इसका विशेष महत्व है। भीष्म छह माह तक मृत्यु शैय्या पर लेटे रहें। यह सिर्फ सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा मात्र नहीं था बल्कि राज्य को सुरक्षित और व्यवस्थित होते देखना था।

भीष्म कहते हैं कि राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य राजा का विधिवत राज्याभिषेक करना है जो महाभारत काल में आधुनिक प्रजातांत्रिक मूल्यों के होने की पुष्टि करता है। राजा रहित राज्य दुर्बल होता है और दस्यु आक्रमण से ग्रस्त रहता है। भीषण नरसंहार से द्रवित युधिष्ठिर ने अग्निहोत्र बनने की इच्छा प्रकट की तब व्यास जी ने समझाया सर्वस्व त्याग कर निधन हो जाना मुनियों का धर्म है राजा का नहीं। प्रजा के अभाव में राजा नहीं हो सकता, राजा नहीं है तो राज्य नहीं होगा, राज्य नहीं होगा तो राजा धर्म कैसे करेगा। अतः प्रजा रक्षा राजा का परम धर्म है।

महाभारत में 37 आमात्य, 8 मंत्री की संख्या बताई गई है। आमात्य को राजा के मित्र, सहयोगी, सलाहकार व दरबारी के रूप में निरूपित किया गया है जबकि मंत्री विद्या में प्रवीण, विनयशील, धर्म अर्थ में कुशल और सरल स्वभाव वाले होने चाहिए। राजा की मंत्री परिषद में समाज के प्रत्येक वर्ग का उचित प्रतिनिधित्व होता था जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र शामिल होते थे। मंत्री परिषद का परामर्श अनिवार्य होता था।

महाभारत में राजा की कर्तव्य निम्नलिखित बताए गए हैं प्रजा के धर्मानुकूल शासन करना, प्रजा के सुख की वृद्धि करना, निरंतर मंत्र चिंतन करना, शत्रु राजाओं से युद्ध करना, दुर्ग की रक्षा करना आदि।

महाभारत के शांति पर्व और अनुशासन पर्व में यत्र तत्र बिखरे राजनीतिक सिद्धांतों का बिंदुवार निरूपण इस प्रकार है–

- एक राजा को राजकीय मामलों में भावनात्मक नहीं होना चाहिए। उसके निर्णय बौद्धिक और आवश्यकतानुसार कठोर भी होने चाहिए।
- राजकाज की क्रियाविधि व गतिविधि को गोपनीय रखा जाना चाहिए। कोई भी गुप्त योजना जनता के संज्ञान में तब तक नहीं आनी चाहिए जब तक की उसका क्रियान्वयन न कर दिया जाए ।
- बुराइयों को समय पर समाप्त कर दिया जाना चाहिए अन्यथा बहुत ही घातक सिद्ध हो सकती है।
- शत्रु को समाप्त करने का कोई भी प्रयास अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर छलपूर्ण तरीका भी अपनाया जा सकता है।
- जन भावनाओं का सम्मान करते हुए सावधानीपूर्वक शासन का संचालन किया जाना चाहिए ।

वर्तमान मानव जीवन में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में लोक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को चरितार्थ करने के लिए महाभारत में वर्णित सिद्धांत और शिक्षाओं का अनुशीलन महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए "प्रजा की रक्षा करना राजा का परम धर्म है", महाभारत का यह वाक्य वर्तमान में लोक कल्याण कारी राज्य की संकल्पना को जन्म देता है।

राजनेताओं में नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए महाभारत में वर्णित आमात्य व मंत्री के लिए निर्दिष्ट गुणों को प्रसारित किया जा सकता है।'

महाभारत में "राजा कौन बने" इसमें जनता की सर्वसम्मति को महत्वपूर्ण माना गया है। वंशानुगत राज्य में भी राजा की इच्छा सर्वोपरि नहीं थी बल्कि जनता की अनुमति अनिवार्य थी। वर्तमान समय में अधिकांश लोकतंत्र में जनता को शक्ति का स्रोत माना गया है।

महाभारत काल में सभासदों के गुणों का उल्लेख किया गया है जो कि वर्तमान में सांसदों में विद्यमान नहीं है। उस संदर्भ में यह अभी भी प्रासंगिक है।

महाभारत काल की प्रशासनिक व्यवस्था आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक है उस समय पदाधिकारी आधुनिक सचिव एवं मुख्य सचिवों की भांति विचार विमर्श किया करते थे।

उस समय लिए गए निर्णय का पुनःनिरीक्षण होता था। प्राचीन भारत में दिए गए निर्णय बहुमत पर पर निर्भर थे जो आधुनिक संदर्भ में भी पूर्णतः प्रासंगिक है।

मंत्री परिषद में सभी वर्गों का उचित प्रतिनिधित्व समतामूलक समाज का परिचायक था । 3500 वर्ष पूर्व भारत बगैर जाति भेदभाव के योग्यता के महत्व को समझता था अतः समाज को जातिगत विभाजन के दुष्परिणामों को समझते हुए महाभारत से सीखना चाहिए कि जाति पर योग्यता भारी पड़ती है।

अनुशासन पर्व में नैतिक मूल्य

प्राचीन काल में जिसे धर्म कहा जाता था, वर्तमान में उसे नीति शास्त्र के अंतर्गत रखा जाता है। अनुशासन पर्व के प्रथम उपपर्व दानधर्मपर्व में नैतिक मूल्यों का वर्णन किया गया है। नैतिक मूल्य समाज के संचालन में महत्वपूर्ण है। मानव जीवन में मूल्य का बड़ा महत्व है। महाभारत के संदर्भ में कहा जाता है कि –" जो यहां है वही अन्यत्र है, जो यहां नहीं है वह कहीं नहीं है " यह इसकी विषय वस्तु की व्यापकता को दर्शाता है और यह नैतिक मूल्यों के संदर्भ में भी सत्य है।

महाभारत में आध्यात्मिक जीवन के लिए धर्म का आचरण अनिवार्य बताया गया है। भीष्म पर्व में कहा गया है कि देवी संपत्ति (धर्म) मोक्ष प्रदान करने वाली और आसुरी संपत्ति (अधर्म) बंधन में डालने वाली होती है।

अनुशासन पर्व में देवी और आसुरी संपत्ति का वर्णन किया गया है। देवी औरआसुरी संपत्ति को क्रमशः धर्म और अधर्म की संज्ञा दी गई है। धर्म के संबंध में अनुशासन पर्व सापेक्षतावाद का सिद्धांत अपनाता है। सत्य, अहिंसा, परोपकार इंद्रिय दमन, दक्षता जैसे नैतिक गुण परस्पर सापेक्ष है और व्यवहार में एक दूसरे के पूरक हैं। इसी प्रकार हिंसा, असत्य, लोभ, क्रोध जैसे दुर्गुण परस्पर एक दूसरे के सहायक और वृद्धि कारक हैं। सत्य, अहिंसा, परोपकार आदि जैसे उत्तम गुणों का पालन करने पर व्यक्ति स्वर्ग को प्राप्त करता है। हिंसा, असत्य, तमस भाव निम्न योनियों में ले जाते हैं। सत्य के पालन में अहिंसा का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है, ब्रह्म साक्षात्कार के लिए धर्म का पालन और अधर्म का परित्याग अनिवार्य है।

अनुशासन पर्व का दसवां अध्याय धर्म को बताता है और कहता है कि सत्पुरुषों को किसी के सामने उपदेश नहीं देना चाहिए क्योंकि धर्म की गति सूक्ष्म है और जो व्यक्ति अपने अंतःकरण को शुद्ध और वशीभूत नहीं कर पाता है उसके लिए धर्म को समझना बहुत जटिल है।

अनुशासन पर्व व्रत को भी एक महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य के रूप में प्रतिपादित करता है। अनुशासन पर्व में कहा गया है कि जो प्रातः काल और सायं काल भोजन करता है वह सदा उपवासी ही कहा जाता है। जो व्यक्ति एक एक पक्ष का व्रत रखते हैं उसका शरीर क्षीण हो जाता है, उसे तपस्या नहीं माना गया है। त्याग और विनम्रता ही उत्तम तप है।

अनुशासन पर्व इंद्रियों के दमन को अत्यधिक महत्व प्रदान करता है जो एक सात्विक गुण है। दम रहित व्यक्ति के कार्य सिद्ध नहीं होते हैं। दम में सभी गुण विद्यमान होते हैं, दम तेज में वृद्धि करता है, दम पवित्र होता है, दम से युक्त पुरुष निष्पाप, निर्भय होता है दम रहित व्यक्ति से प्राणियों को सदैव भय रहता है उन्हीं के प्रतिरोध के लिए ब्रह्मा ने राजा को बनाया। इंद्रियों का दमन करने वाले पुरुष क्षमाशील होते हैं दान से दम का स्थान ऊंचा है। दानी पुरुष दान करते समय कभी क्रोध भी कर सकता है दमनशील व्यक्ति कभी क्रोध नहीं करता, इसलिए वह दान से श्रेष्ठ है। दम के गुण निम्न है– क्रोध न करना, संतोष, श्रद्धा, अभिमानहीनता, गुरुपूजा, अनुसूया, प्राणी मात्र पर दया, चोरी ने करना। दान करते समय अगर क्रोध आ जाए तो दान का फल नष्ट हो जाता है इसलिए उस क्रोध को दबाने वाला जो गुण है वह दम है और वह दान से श्रेष्ठ माना गया है।

अनुशासन पर्व में सत्य के विषय में कहा गया है सत्य के प्रभाव से सूर्य तपते हैं, सत्य से अग्नि जलती है, सत्य से वायु का सभी जगह संचार होता है क्योंकि सब कुछ सत्य पर आधारित है। इसका एक उदाहरण देते हुए कहा गया है कि अगर तराजू के पलडे पर 1000 अश्वमेध यज्ञ का पुण्य दूसरे पलडे पर केवल सत्य रखा जाए तो सत्य का पलडा ही भारी होगा। सत्य से देवता पितर, ब्राह्मण प्रसन्न होते हैं। सत्य परम धर्म है। सत्य सबसे श्रेष्ठ कहा जाता है।

अनुशासन पर्व में सुख–दुख की परिभाषा दी गई है जो आनंदायी है, वह सुख है और जो अभीष्ट नहीं है, वह दुख है। प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे सुख मिले और दुख उससे दूर रहे । अतः मनुष्य सुख की प्राप्ति और दुख के निषेध के लिए कर्म में प्रवृत्त होता है। कर्म करने वाला मनुष्य अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल स्वंय भोगता है, यह बात संसार में प्रत्यक्ष दिखाई देती है। अच्छा काम करने पर सुख और बुरा काम करने पर दुख मिलता है। अपना किया हुआ कर्म हमेशा फल देता है। कर्म का विधान मन से होता है और जीवात्मा उसका भोक्ता है। जीव जो कर्म अपने शरीर से करता है शरीर धारण कर उसे भोगता है। शरीर ही सुख–दुख का आयतन है। वाणी द्वारा किए गए कर्म को वाणी से भोग करता है, मानसिक कर्म को मन से भोग करता है

अनुशासन पर्व में दान और उसके फल का वर्णन विशद रूप से किया गया है दान के फल के बारे में कहा गया है कि जो सभी व्यक्तियों को संकट के समय अनुग्रह करता है या याचक को अभीष्ट देता है, प्यास से पीड़ित व्यक्ति को पानी पिलाता है, उत्तम दान करता है। सभी दानों में भूमि दान का महत्व सर्वाधिक बताया गया है, पृथ्वी अचल और अक्षय है और इस लोक में समस्त उत्तम भोगों को देने वाली है।

अनुशासन पर्व में मद्य मांस की सेवन से महान दोष की उत्पत्ति बताई गई है। अहिंसा परम धर्म है अहिंसा परम तप है, अहिंसा परम सत्य है, उसी से धर्म की प्रवृत्ति होती है। जीव की हत्या करने से मांस उपलब्ध होता है अतः उसे खाने में महान दोष है। मद्य मांस परित्याग कर मनुष्य सदा यज्ञ करने वाला, ध्यान वाला होता है। संपूर्ण दानों का जो फल है वह मिलकर भी अहिंसा के बराबर नहीं हो सकता ।

महाभारत में दक्षता पर अधिक बल दिया गया है। वैभव और ऐश्वर्य दक्षता में रहते हैं, आलसी व्यक्ति में नहीं। इसी प्रकार महाभारत में एक स्थान पर शोक से अभिभूत न होना भी महान गुण है। सुख या दुख हो, प्रिय अथवा अप्रिय हो, जो कुछ भी प्राप्त हो हृदय से पराजित नहीं होना चाहिए ।

आध्यात्मिकता में उपयोगी गुण निर्ममत्व को भी उपयोगी बताया गया है। इसका अर्थ है– ममता का अभाव। जहाँ भी व्यक्ति की ममता होती है वह उसे संतृप्त करने वाली होती है। जब वह इससे भयभीत नहीं होता तो जीव शांति को प्राप्त करता है। पुरुष मन, कर्म और वाणी से पाप नहीं करता है तो उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है अनुशासन पर्व में कुल 10 तरह कर्मों का त्याग करना बताया है।

नैतिक गुणों में तपस्या को विशेष महत्व दिया गया है मनुष्य जितना तप करता है उसी के अनुसार उत्तम लोक प्राप्त होता है। सब कुछ तपस्या मूलक है। ऋषियों ने भी तपस्या से वेदों को प्राप्त किया जो बहुत कठिन है वह सब तपस्या से संभव होता है। तपस्या व विद्या दोनों से ही महान पद को प्राप्त किया जाता है। तपस्या से स्वर्ग मिलता है। ज्ञान, विज्ञान, आरोग्य, रूप, संपत्ति, स्वभाव तपस्या से प्राप्त होते हैं।

वर्तमान मानव जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता

नैतिक मूल्य वर्तमान समय से अधिक महत्वपूर्ण कभी नहीं रहे, केवल व्यक्ति के संदर्भ में ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हो गए हैं।

नैतिकता लोगों के एक–दूसरे और उनके आसपास की दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नैतिकता नैतिक सिद्धांत हैं जो लोगों के व्यवहार, निर्णय और कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं। ये सिद्धांत सही और गलत, अच्छा और बुरा, निष्पक्षता और न्याय की अवधारणाओं पर आधारित हैं।

जो व्यक्ति नैतिक व्यवहार को प्राथमिकता देते हैं, उनके आपसी सम्मान, विश्वास और ईमानदारी पर आधारित मजबूत, स्वस्थ रिश्ते बनाने की अधिक संभावना होती है। वे स्वयं से परे, दूसरों की भावनाओं और भलाई को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने की अधिक संभावना रखते हैं।

एक समाज के रूप में हम जो भी तकनीकी, आर्थिक और अन्य प्रगति करते हैं वह सच्ची सफलता नहीं होगी, यदि हम अपनी नैतिकता और मूल्यों को छोड़ देते हैं। यह हमारी नैतिकता ही है जो हमें बनाती है कि हम कौन हैं?

मूल्यों की प्राप्ति से पहले हमें व्यक्ति के जीवन और समाज का भी मुआयना करना होगा तभी हम श्रेष्ठ मूल्यों को समाज में स्थापित कर सकते हैं. मूल्य, व्यक्ति की सामाजिक विरासत का एक अंग होता है इसलिए मूल्यों की व्यवस्था मानव आस्तित्व के विभिन्न स्तरों या आयामों में व्यक्ति के अनुकूलन की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करती है. नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के साथ साथ समाज को भी उत्कृष्टता की तरफ अग्रसर करते हैं।

मनुष्यता के आकलन के लिए नैतिकता जरूरी है नैतिकता व्यक्तित्व के विकास में एक सीधी के समान होती है इसके सारे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान राजनीति और मानवीय समाज अनेक प्रकार से दोषों से ग्रस्त है। राजनीति में शासक में अपेक्षित योग्यता एवं गुणों का अभाव है जिससे शासन व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित नहीं हो रही है। मंत्री और सांसद आरोपों में लिप्त हैं। भ्रष्टाचार एक आम बात है। राजनीति में योग्यता की बजाय जाति धर्म, क्षेत्र, पार्टी आदि के आधार पर चयन किया जाता है वही दूसरी ओर नैतिकता के क्षेत्र में व्यक्ति के नैतिक चरित्र का पतन हो रहा है इंद्रिय सुखों को प्राथमिकता दी जा रही है भोगवादी जीवन शैली का वर्चस्व है, व्यक्ति स्वार्थी हो गया है। मानव संवेदना, करुणा, संयम, दया यह जैसे गुण पतन की ओर अग्रसर है।

वर्तमान मानव समाज एवं राजनीति को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है कि हम महाभारत के अनुशासन पर्व को पथ प्रदर्शक के रूप में देखें। इसके लिए राजनीति में शासकों का योग्यता, दक्षता नैतिक चरित्र के आधार पर चयन करें। जातिवाद, भाई भतीजावाद से बाहर निकल कर योग्यता को वरीयता दें। शासन और सरकार को उत्तरदायी और जवाबदेह बनाने के विभिन्न साधनों का प्रयोग करें। इसमें महाभारत के राजनीतिक सिद्धांत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नैतिक स्थान के लिए हमें अनुशासन पर्व में वर्णित नैतिक मूल्यों को अपनाने की जरूरत है समग्र समाज की भलाई के लिए वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात करने की जरूरत है। महाभारत में वर्णित राजनीतिक विचारधाराओं, नैतिक मूल्यों, शिक्षाओं का महत्व आधुनिक राजनीति में उसकी उपयोगिता वर्तमान संदर्भ में अति महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाभारत शांति पर्व 299/20
2. महाभारत शांति पर्व
3. आरसी गुप्ता ग्रेट पॉलीटिकल थिंकर ईस्ट एंड वेस्ट लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एजुकेशनल पब्लिशर्स आगरा 2005 पेज नंबर 13
4. महाभारत शांति पर्व 56/15 महाभारत शांति पर्व 58/114
5. पंत सुरेश चंद्र, हिंदू राज्यशास्त्र एवं शासन, पृष्ठ 102
6. महाभारत शांति पर्व 83/2
7. जयदयाल गोयंदका, संक्षिप्त महाभारत, द्वितीय खंड, गीता प्रेस गोरखपुर
8. महाभारत भीष्म पर्व
9. महाभारत अनुशासन पर्व

10. भगदीकर, पी. एस. (2019) रेलेवेन्स ऑफ एन्प्रियट इण्डियन पोलिटिकल थॉट विद स्पेशल रेफरेन्स टू महाभारत संशोधन, 8, 141–146.

11. पांडे, पी. (2019ए). राजधर्म इन महाभारतः विद स्पेशल रेफरेन्स टू शांति पर्व. डीके प्रिंटवर्ल्ड (पी) लिमिटेड,

12. पाडे, पी (2019बी) राजधर्म इन महाभारतः विद स्पेशल रेफरेन्स टू शांति पर्व डीके प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लिमिटेड,

13. चक्रवर्ती विद्युत (1994). "फाउन्डेशन्स ऑफ इण्डियन पोलिटिकल थॉट एन इन्टप्रटेशन (फ्रॉम मनु टू द प्रेसेन्ट डे) वी आर मेहता. मनोहर नई दिल्ली, 1992 पीपी. 303" माडर्न एशियन अध्ययन 28 (2) 431–38

14. फ्रांसिस बुडकुले, के. (2010) महाभारत मिथ्स इन कन्टेम्पोरेरी राइटिंग्स चैलेन्जिंग आइडियॉलॉजी,

15. नेहरू, जवाहरलाल. 2008, डिस्कवरी ऑफ इंडिया, पेंगुइन यूके.

16. पारेख, बी. (1992). द पॉवर्टी ऑफ इण्डियन पोलिटिकल थियोरी, हिस्ट्री ऑफ पोलिटिकल थोट, 13(3), 535–560.

17. सिंह. एस. पी. (2015) कॉन्सेप्ट ऑफ राजधर्म इन आदि काव्य इन रामायण एण्ड महाभारत इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 61 (1), 132–138,

18. Sukthankar] Vishnu S- and Shrimant Balasaheb Pant Pratinidhi (1933). The Mahabharata: for the first time critically edited.

19. Chaitanya] Krishna (K.K. Nair). The Mahabharata, A Literary Study, Clarion Books, New Delhi 1985.

20. Badrinath, Chaturvedi. The Mahābhārata: An Inquiry in the Human

21. Condition, New Delhi, Orient Longman (2006).

22. Bhasin] R. V. Mahabharata published by National Publications, India] 2007.

23. Gupta, S. P. and Ramachandran] K. S. (ed.) Mahabharata: myth and reality. Agam Prakashan, New Delhi 1976.

24. Sullivan] Bruce M. Seer of the Fifth Veda] Krsna Dvaipayana Vyasa in the Mahabharata. Motilal Banarsidass. New Delhi 1999.

25. Vaidya] R. V. A Study of Mahabharat (A Research, Poona, A.V.G. Prakashan, 1967

❖◆❖